श्री विष्णु सहस्रनाम

भगवान विष्णु के सहस्रनाम की व्याख्या

भाग - 8

व्याख्याकार

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त आश्रम प्रकाशन

www.vmission.org.in

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

इस पुस्तिका में भगवान विष्णु के
701 से 800 नाम तक की व्याख्या उपलब्ध है।

701. ॐ सत्तायै
702. ॐ सद्भूतये
703. ॐ सत्परायणाय
704. ॐ शूरसेनाय
705. ॐ यदुश्रेष्ठाय
706. ॐ सन्निवासाय
707. ॐ सुयामुनाय
708. ॐ भूतावासाय
709. ॐ वासुदेवाय
710. ॐ सर्वासुनिलयाय
711. ॐ अनलाय
712. ॐ दर्पघ्ने
713. ॐ दर्पदाय
714. ॐ दृप्ताय
715. ॐ दुर्धराय
716. ॐ अपराजिताय
717. ॐ विश्वमूर्तये
718. ॐ महामूर्तये
719. ॐ दीप्तमूर्तये
720. ॐ अमूर्तिमते
721. ॐ अनेकमूर्तये
722. ॐ अव्यक्ताय
723. ॐ शतमूर्तये
724. ॐ शताननाय
725. ॐ एकस्मै
726. ॐ नेकस्मै
727. ॐ सवाय
728. ॐ काय
729. ॐ कस्मै
730. ॐ यस्मै
731. ॐ तस्मै
732. ॐ पदायानुत्तमाय
733. ॐ लोकबन्धवे
734. ॐ लोकनाथाय
735. ॐ माधवाय
736. ॐ भक्तवत्सलाय
737. ॐ सुवर्णवर्णाय
738. ॐ हेमांगाय
739. ॐ वरांगाय
740. ॐ चन्दनांगदिने
741. ॐ वीरघ्ने
742. ॐ विषमाय
743. ॐ शून्याय
744. ॐ धृताशिषे
745. ॐ अचलाय
746. ॐ चलाय

ॐ

747. ॐ अमानिने नमः
748. ॐ मानदाय
749. ॐ मान्याय
750. ॐ लोकस्वामिने
751. ॐ त्रिलोकधृते
752. ॐ सुमेधसे
753. ॐ मेघजाय
754. ॐ धन्याय
755. ॐ सत्यमेधसे
756. ॐ धराधराय
757. ॐ तेजोवृषाय
758. ॐ द्युतिधराय
759. ॐ सर्वशस्त्रभृतां वराय
760. ॐ प्रग्रहाय
761. ॐ निग्रहाय
762. ॐ व्यग्राय
763. ॐ नैकशृंगाय
764. ॐ गदाग्रजाय
765. ॐ चतुमूर्तये
766. ॐ चतुर्बाहवे
767. ॐ चतुर्व्यूहाय
768. ॐ चतुर्गतये
769. ॐ चतुरात्मने
770. ॐ चतुर्भावाय
771. ॐ चतुर्वेदविदे
772. ॐ एकपदे
773. ॐ समावर्ताय
774. ॐ अनिवृत्तात्मने
775. ॐ दुर्जयाय
776. ॐ दुरतिक्रमाय
777. ॐ दुर्लभाय
778. ॐ दुर्गमाय
779. ॐ दुर्गाय
780. ॐ दुरावासाय
781. ॐ दुरारिघ्ने
782. ॐ शुभांगाय
783. ॐ लोकसारंगाय
784. ॐ सुतन्तवे
785. ॐ तन्तुवर्धनाय
786. ॐ इन्द्रकर्मणे
787. ॐ महाकर्मणे
788. ॐ कृतकर्मणे
789. ॐ कृतागमाय
790. ॐ उद्भवाय
791. ॐ सुन्दराय
792. ॐ सुन्दाय
793. ॐ रत्ननाभाय
794. ॐ सुलोचनाय
795. ॐ अर्काय
796. ॐ वाजसनाय
797. ॐ श्रृंगिणे
798. ॐ जयन्ताय
799. ॐ सर्वविज्जयिने
800. ॐ सुवर्णबिन्दवे नमः

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७०१ –

ॐ सत्तायै नमः

सत्ता रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Absolute Existence.

सजातीयविजातीयस्वगतभेदरहिता अनुभूतिः सत्ता, 'एकमेव अद्वितीयम्' इति श्रुतेः अर्थात् सजातीय, विजातीय और स्वगत भेद से रहित अनुभूति का नाम सत्ता है। श्रुति कहती है – 'एक ही अद्वितीय हैं।' एक ही सत्ता नाम-रूप आदि भेद की वजह से विविध रूपों से भासित होती है। सत्ता में सजातीय भेद, अर्थात, एक ही जाति के अन्दर के भेद जैसे काली गाय, सफेद गाय आदि, विजातीय, अर्थात, अपने से पृथक् जाति का यथा गाय से अश्व आदि का भेद, तथा स्वगत, अर्थात्, एक ही शरीर में हाथ, पैर आदि अवयवों का भेद – यह सब नहीं होता है। वह सब में एकरूप से स्थित है। उन सत्तारूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७०२ -

ॐ सद्भूतये नमः

सद्भूति रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Non-negatable Existence.

सन्नेव परमात्मा चिदात्मकः अबाधाद् भासमानत्वात् च सद्भूतिः नान्यः। अर्थात् वे चिदात्मक सत्स्वरूप परमात्मा ही अबाधित तथा बहुत प्रकार से भासित होने के कारण सद्भूति हैं, और कोई नहीं। परमात्मा स्वयं इन रूपों में अभिव्यक्त होकर अनेकों प्रकार से भासित हो रहे हैं। जगत के बाधित हो जानेपर सत्स्वरूप परमात्मा के सिवा कुछ भी शेष नहीं रहता है। इसलिए वे सद्भूति रूप हैं। उन सद्भूति रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७०३ –

ॐ सत्परायणाय नमः

सन्मार्गियों के गन्तव्यरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Goal of Good.

सतां तत्त्वविदां परं प्रकृष्टं अयनमिति सत् परायणम् अर्थात् तत्त्वदर्शी सत्पुरुषों के परम – श्रेष्ठ अयन अर्थात् स्थान हैं, इसलिए सत्परायण हैं। जो भी सन्मार्गगामी पुरुष परमात्मा के तत्त्व को जान लेता हैं, वह परमात्मस्वरूप ही हो जाता हैं। इसलिए वे सत्पुरुषों के अयन अर्थात् लक्ष्यरूप कहे जाते हैं।

उन सन्मार्गगामी पुरुषों के परं गन्तव्यरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७०४ –

ॐ शूरसेनाय नमः

बलशाली सेनावाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has Valient Army.

हनूमत्प्रमुखाः सैनिकाः शौर्यशालिनो यस्यां सेनायां सा शूरसेना यस्य स शूरसेनः अर्थात् जिस सेनामें हनुमान् आदि शूरवीर सैनिक हैं, वह शूरसेना जिनकी है, वे भगवान् शूरसेन हैं। भगवान के श्रीराम अवतार के समय रावण जैसे महाबलि राक्षस को मारने के लिए हनुमान जैसे अनेकों बलशाली योद्धा भगवान राम की सेना में सम्मिलित हुए थे, इसलिए वे शूरसेन कहे जाते हैं। उन बलशाली सेना वाले भगवान श्रीराम को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७०५ -

ॐ यदुश्रेष्ठाय नमः

यदुकुल श्रेष्ठ श्रीकृष्ण को नमस्कार।

I salute Lord Shri Krishna - Glory of the Yadavas.

यदूनां प्रधानत्वात् यदुश्रेष्ठः अर्थात् यदुवंशियों में प्रधान होने के कारण भगवान् यदुश्रेष्ठ हैं। प्रसिद्ध राजा ययाति के पुत्र राजा यदु के नाम से यादव कुल जाना जाता है। उसी कुल में भगवान श्रीकृष्ण जन्मे थे। जिसकी वजह से उस कुल की महिमा और भी वृद्धि को प्राप्त हुई, इसलिए भगवान यदुश्रेष्ठ कहलाते हैं।

उन यदुकुल में उत्पन्न श्रीकृष्णरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७०६ –

ॐ सन्निवासाय नमः

विद्वानों के आश्रयरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Abode of the Good.

सतां विदुषाम् आश्रयः सन्निवासः अर्थात् सत् अर्थात् विद्वानों के आश्रय हैं, इसलिए सन्निवास हैं। जो भी मुमुक्षु–जिज्ञासु शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करता है, वह सत्स्वरूप परमात्मा को अपरोक्ष रूप से जानकर उसी में स्थित होता हैं। इसलिए वे विद्वानों के आश्रयरूप कहलाते हैं।

उन विद्वानों के आश्रयरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७०७ –

ॐ सुयामुनाय नमः

यमुनातट पर सुन्दर लीला रचानेवाले श्रीकृष्ण को नमस्कार।

I salute the one who is One Attended by Gopas.

गोपवेषधरा यमुनाः परिवेष्टारो पद्मासनादयः शोभना अस्य इति सुयामुनः अर्थात् जिनके यमुनातटवर्ती गोपवेष धारी परिवेष्टा या पद्म एवं आसन आदि सुन्दर हैं, वे भगवान सुयामुन हैं। भगवान ने अपने श्रीकृष्णरूप अवतार में यमुना के तट पर निवास किया था। तथा गोपवेष धारण करके गायें चराना, आसन लगाकर बैठना आदि विविध चेष्टाएं किया करते थे। उनकी प्रत्येक चेष्टा अत्यन्त सुन्दर होने के कारण वे सुयामुन हैं। उन सुयामुन भगवान श्रीकृष्ण को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७०८ –

ॐ भूतावासाय नमः

जगत के आश्रयरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Abode of the Great Elements.

भूतानि अत्र अभिमुख्येन वसन्ति इति भूतावासः, 'वसन्ति त्वयि भूतानि भूतावासस्ततो भवान्।' अर्थात् भगवान् में सर्वभूत मुख्यरूप से निवास करते हैं, इसलिए वे भूतावास हैं। हरिवंश में कहा हैं – 'आपमें भूत बसते हैं, इसलिए आप भूतावास हैं।' जिस प्रकार सभी लहरें जल में वास करती है। उसी प्रकार समस्त पंचमहाभूत का बना हुआ जगत सच्चित्स्वरूप परमात्मा में ही वास करता है। इसलिए वे भूतावास कहलाते हैं। उन जगत के आश्रयरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७०९ –

ॐ वासुदेवाय नमः

माया से सबको ढ़कनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Envelope the World with Maya.

जगद् आच्छादयति मायया इति वासुः, स एव देव इति वासुदेवः। अर्थात् जगत को माया से आच्छादित करते हैं, इसलिए वासु हैं और वे ही देव भी हैं, इसीलिए वासुदेव हैं। जगत परमात्मा से ही उत्पन्न हुआ है, तथा जगत के कण–कण में सत्तारूप से व्याप्त हैं। तथापि जगत परमात्मा की माया से आच्छादित होने के कारण स्वतंत्र अस्तित्वयुक्त प्रतीत होता है। ऐसे समर्थ चिन्मयी परमात्मा की मायाशक्ति भी अत्यन्त समर्थ हैं। उन माया से सबको आच्छादित करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७१० –

ॐ सर्वासुनिलयाय नमः

प्राणधारी जीवरूप में स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Abode of all Life-Energies.

सर्व एव आसवः प्राणाः जीवात्मके यस्मिन्नाश्रये निलीयन्ते स सर्वासुनिलयः अर्थात् सम्पूर्ण प्राण जिस जीवरूप आश्रय में लीन हो जाते हैं, वह सर्वासुनिलय हैं। जीव परमात्मा की सबसे महान, दिव्य विभूति हैं। इसलिए वह परा प्रकृति भी कहलाता है। यह जीव ही प्राणों को धारण करता है, इसलिए जीवरूप से स्थित परमात्मा ही सर्वासु–निलय कहलाते हैं।

उन प्राणधारी जीव की तरह से स्थित महान विभूति रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७११ –

ॐ अनलाय नमः

सम्पन्नता से युक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Limitless Glory & Power.

अलम् पर्याप्तिः शक्तिसम्पदां नास्य विद्यते इति अनलः। अर्थात् भगवान् की शक्ति और सम्पत्ति का अलं अर्थात् समाप्ति नहीं है, इसलिए वे अनल हैं। समस्त शक्ति और सम्पत्ति का मूल स्रोत परमात्मा स्वयं ही हैं। इसलिए वे शक्ति और सम्पत्ति आदि के निधिरूप है, उनमें शक्ति और सम्पत्ति की कभी भी समाप्ति हो ही नहीं सकती है। इसलिए वे अनल कहलाते हैं। उन शक्ति और सम्पत्ति के निधिरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७१२ -

ॐ दर्पघ्ने नमः

दर्पविनाशक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Destroyer of Pride.

धर्मविरुद्धे पथि तिष्ठतां दर्पं हन्ति इति दर्पहा अर्थात् धर्मविरुद्ध मार्ग में रहनेवालों का दर्प नष्ट करते हैं, इसलिए दर्पहा हैं। भगवान को धर्म अत्यन्त प्रिय है, क्योंकि धर्म से ही सृष्टि का सुव्यवस्थित संचालन होता है। जिसमें दर्प अर्थात् अभिमान होता है, वह धर्म से विपरीत मार्ग पर स्थित होता है, भगवान उनके दर्प अर्थात् अभिमान को समाप्त करके उसे धर्ममार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं।

उन दर्पविनाशक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७१३ -

ॐ दर्पदाय नमः

सन्मार्गियों को गर्वान्वित करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Giver of Pride.

धर्मवर्त्मनि वर्तमानानां दर्पं ददाति इति दर्पदः। अर्थात् धर्म-मार्ग में रहनेवालों को दर्प अर्थात् गौरव देते हैं, इसलिए दर्पद हैं। भगवान को धर्म अत्यन्त प्रिय हैं, अतः जो भी धर्ममार्ग पर चलते हैं, उन्हें वे सम्मानित करने के द्वारा उसका गौरव बढ़ाते हैं। जिससे वे धर्म का ओर भी तीव्रता से पालन करने के लिए प्रोत्साहित हो, इस प्रकार धर्मस्थापना के माध्यम से सृष्टि की व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहें। उन सन्मार्गियों को गौरवान्वित करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७१४ –

ॐ दृप्ताय नमः

आत्मानन्द में तृप्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Intoxicated with Infinite Bliss.

स्वात्मामृतरसास्वादनात् नित्य प्रमुदितो दृप्तः अर्थात् अपने आत्मारूप अमृतरस का आस्वादन करने के कारण नित्य प्रमुदित रहते हैं, इसलिए वे दृप्त हैं। परमात्मा स्वयं आनन्दस्वरूप हैं, अतः उनका आनन्द किसी बाह्य वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति पर निर्भर नहीं है। वे स्वयं आनन्दस्वरूप आत्मा में ही रमते हुए आनन्दित रहते हैं। इसलिए वे दृप्त कहलाते हैं।

उन आनन्दस्वरूपता में तृप्त होनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७१५ –

ॐ दुर्धराय नमः

दुर्धरस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Incomprehensible.

न शक्या धारणा अस्य प्रणिधानादिषु सर्वोपाधि –विनिर्मुक्तत्वात् तथापि तत्प्रसादतः कैश्चिद् दुःखेन धार्यते हृदये जन्मान्तरसहस्रेषु भावनायोगात्, तस्माद् दुर्धरः। अर्थात् समस्त उपाधियों से रहित होने के कारण, उन भगवान् के ही प्रसाद से कोई कोई हजारों जन्मों की भावना के योग से अपने हृदय में बड़ी कठिनता से धारण करते हैं, इसलिए वे दुर्धर हैं। परमात्मा संकुचित जीव के द्वारा प्राप्त नहीं हो सकते, किन्तु जब जीवभाव का परमात्मा में विसर्जन हो जाता है, तब ही उन्हें आत्मस्वरूपतः पाया जा सकता हैं, इसलिए वे दुर्धर हैं। उन दुर्धर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७१६ –

ॐ अपराजिताय नमः

अजेयस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Unvanquished.

न आन्तरैः रागादिभिः बाह्यैरपि दानवादिभिः शत्रुभिः पराजितः इति अपराजितः। अर्थात् रागादि आन्तरिक शत्रुओं से और बाह्य दानवादि शत्रुओं से पराजित नहीं होते, इसलिए अपराजित हैं। जगत में कितना भी असुरों का आतंक हो जाए अथवा जीव के अन्तःकरण में रागादि विकारों का ताण्डव होने पर भी उन सब के अधिष्ठानस्वरूप परमात्मा उनसे अछूते रहते हैं। मानों यह सब शत्रु उन्हें पराजित कर ही नहीं पाते हैं।

उन अपराजित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७१७ –

ॐ विश्वमूर्तये नमः

विश्वमूर्ति रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Universal Form.

विश्वं मूर्तिः अस्य सर्वात्मकत्वात् इति विश्वमूर्तिः अर्थात् सर्वात्मक होनेके कारण विश्व भगवान् की मूर्ति हैं, इसलिए वे विश्वमूर्ति हैं। जिस प्रकार जल विविध लहरें, फेनें, बुलबुलों के रूप में अभिव्यक्त हुआ हैं, उन सब लहर आदि की आत्मा जल तत्त्व ही है। उसी प्रकार परमात्मा स्वयं ही अपनी मायाशक्ति से विश्वरूप से प्रस्तुत समस्त नाम-रूपों की तरह अभिव्यक्त हुए हैं। इसलिए वे विश्वमूर्ति हैं।

उन विश्वमूर्ति रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७१८ -

ॐ महामूर्तये नमः

महामूर्ति परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Great Divine Form.

शेषपर्यंकशायिनो अस्य महती मूर्तिः इति महामूर्तिः अर्थात् शेषशय्या पर शयन करनेवाले भगवान् की मूर्ति महती है, इसलिए वे महामूर्ति हैं। पुराणानुसार भगवान क्षीरसागर में शेषनाग की शय्या बनाकर विष्णुरूप में शयन करते हैं। जिनकी चरणसेवा स्वयं लक्ष्मीजी करती हैं। परमात्मा की यह मूर्ति अत्यन्त दिव्य, महान हैं। उनका ध्यान करनेवाले का अन्तःकरण शान्त, सात्विक और शुद्ध होने लगता है। इसलिए यह दिव्यरूप महामूर्ति कहलाता हैं। उन महामूर्ति परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७१९ –

ॐ दीप्तमूर्तये नमः

स्वयं प्रकाशस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has Resplendent Form.

दीप्ता ज्ञानमयी मूर्तिः अस्य इति दीप्तमूर्तिः। अर्थात् भगवान् की ज्ञानमयी मूर्ति दीप्त है, इसलिए वे दीप्तमूर्ति हैं। परमात्मा स्वयं ज्ञानस्वरूप चिन्मयी सत्ता हैं। उन्हींकी दीप्ति से समस्त सूर्य, चन्द्र, अग्नि, नक्षत्रादि देदीप्यमान होकर जगत को प्रकाशित करने में समर्थ होते हैं। किन्तु परमात्मा को कोई भी ज्योति प्रकाशित नहीं कर पाती हैं। इसलिए वे दीप्तमूर्ति कहलाते हैं। उन स्वयं प्रकाशस्वरूप दीप्तमूर्ति रूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७२० –

ॐ अमूर्तिमते नमः

अमूर्तिरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Formless.

कर्मनिबन्धना मूर्तिः अस्य न विद्यते इति अमूर्तिमान्। अर्थात् उनकी कोई कर्मजन्य मूर्ति नहीं है, इसलिए वे अमूर्तिमान् हैं। कर्ता–भोक्तापन से युक्त जीव ही कर्म के बन्धन में होने के कारण कर्मफल को भोगने के लिए विविध मूर्त शरीर को धारण करता हैं। परमात्मा स्वयं कर्तृत्व–भोक्तृत्व से रहित समस्त सीमाओं से रहित होने के कारण समस्त नामरूपों से रहित होने के कारण अमूर्तिरूप हैं। स्वयं नामरूपों से परे होने के कारण किसी भी रूप को भी धारण करने में सक्षम हैं। उन अमूर्तिरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७२१ –

ॐ अनेकमूर्तये नमः

अनेकों रूप में अवतरित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who can take Different Forms.

अवतारेषु स्वेच्छया लोकानाम् उपकारिणीः बह्वीमूर्तीः भजते इति अनेकमूर्तिः। अर्थात् अवतारों में अपनी इच्छा से लोकों का उपकार करनेवाली अनेकों मूर्तियां धारण करते हैं, इसलिए अनेकमूर्ति हैं। सृष्टि में धर्म संस्थापना के लिए भगवान अपनी मायाशक्ति को धारण करके प्रत्येक युग में अनेकों रूपों में अवतरित होते हैं। इसलिए वे अनेकमूर्ति कहलाते हैं। उन अनेकों रूपों में अवतरित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७२२ –

ॐ अव्यक्ताय नमः

अव्यक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who manifests variously.

यद्यपि अनेकमूर्तित्वम् अस्य, तथापि अयम् इदृशः एवेति न व्यज्यते इति, अव्यक्तः। अर्थात् यद्यपि अनेक मूर्तिवाले हैं तो भी ये ऐसे ही हैं – इस प्रकार व्यक्त नहीं होते, इसलिए अव्यक्त हैं। अनेकों रूपों में अवतरित परमात्मा किसी भी एक रूप में बद्ध नहीं होते हैं। इसलिए परमात्मा को किसी एक व्यक्तरूप मात्र ही हैं – यह कहना अनुचित होता है। इसलिए वे अव्यक्त कहलाते हैं। उन अव्यक्तस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७२३ -

ॐ शतमूर्तये नमः

विविध मूर्तियों से व्यक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Myriad Forms.

नानाविकल्पजा मूर्तयः संविदाकृतेः सन्ति इति शतमूर्तिः। अर्थात् ज्ञानस्वरूप भगवान् की विकल्पजन्य अनेक मूर्तियां हैं, इसलिए वे शतमूर्ति हैं। जिस प्रकार एक ही प्रकाशरूप सूर्य विविध पात्रों में स्थित जल में प्रतिबिम्बित होकर उसे प्रकाशित करते हैं। वैसे ही चेतन स्वरूप परमात्मा विविधतापूर्ण जड़ उपाधियों के माध्यम से अभिव्यक्त होकर प्रतीत होते हैं। ऐसे अनेकों मूर्ति को जीवन्त करते हुए अभिव्यक्त होने के कारण वे शतमूर्ति कहलाते हैं। उन शतमूर्ति को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७२४ –

ॐ शताननाय नमः

अनेकों मुखवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Numerous Countenance.

विश्वादिमूर्तित्वं यतो अतः एव शताननः। अर्थात् क्योंकि वे विश्व आदि मूर्तियोंवाले हैं, इसलिए शतानन हैं। परमात्मा स्वयं अमूर्ति हैं, इसलिए वे सब मूर्तियों में अर्थात् उपाधियों में अभिव्यक्त होते हैं। इस कारण से सब उपाधि के मुख मानों उनके ही होने से वे शतानन कहलाते हैं।

उन अनेक मुखवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७२५ –

ॐ एकस्मै नमः

एक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the One.

परमार्थतः सजातीयविजातीयस्वगतभेदविनिर्मुक्तत्वात् एकः। अर्थात् परमार्थतः सजातीय, विजातीय और स्वगत भेदों से शून्य होने के कारण परमात्मा एक हैं, जैसा कि श्रुति कहती हैं – 'एकमेवाद्वितीयम्' अर्थात् एक ही अद्वितीय हैं। एक ही परमात्मा विविध रूपों से भासित होते है। यह भेद जाति–जाति का जैसे काली गाय, सफेद गाय आदिरूप, अपने से पृथक् जाति का यथा गाय से अश्व आदि का भेद, तथा स्वगत अर्थात् एक ही शरीर में हाथ, पैर आदि अवयवों का भेद होता है। किन्तु परमात्मा स्वयं भेदरहित एक ही तत्त्व हैं। उन एक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७२६ –

ॐ नैकस्मै नमः

माया से अनेकरूपों में व्यक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Many.

मायया बहुरूपत्वात् नैकः; 'इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते' इति श्रुतेः। अर्थात् माया से अनेक रूप होने के कारण नैक हैं। श्रुति कहती है – 'इन्द्र माया से अनेक रूप प्रतीत होता हैं। यद्यपि परमात्मा समस्त भेदों से रहित एक अखण्ड सत्ता हैं। तथापि वे अपनी मायाशक्ति से विविध नामरूपों में भासित होते हैं। इस प्रकार एक होते हुए भी अनेकों रूपों में भासित होते हैं। उन अनेकरूपों में व्यक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७२७ –

ॐ सवाय नमः

यज्ञप्रसाद रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Embodiment of Yagna.

सोमो यत्र अभिसूयते सः अध्वरः सवः। अर्थात् जिसमें सोम निकाला जाता है, उस यज्ञ को सव कहते हैं। निःस्वार्थभाव से किया गया समर्पण युक्त कर्म ही यज्ञ है। यज्ञकर्म के निष्पन्न होने पर जो भी कर्मफल प्राप्त होता है, वही यज्ञ का प्रसाद – सव है। वह अमृतस्वरूप होता है। उसका पान करनेवाला भोगदृष्टि से मुक्त होकर योगदृष्टि से युक्त होता है। वह रागादि दोषों से मुक्त होकर शान्ति का अनुभव करता है। इसलिए यह सव शान्तस्वरूप परमात्मा की ही विभूति हैं। उन यज्ञप्रसादरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७२८ –

ॐ काय नमः

सुखस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Supreme Happiness.

कशब्दः सुखवाचकः, तेन स्तूयते इति कः, 'कं ब्रह्म' इति श्रुतेः। अर्थात् क शब्द सुख का वाचक है, सुखरूप से स्तुति किये जाने के कारण परमात्मा 'क' हैं, जैसा कि श्रुति कहती है – 'सुखरूप ब्रह्म हैं।' परमात्मा स्वयं आनन्दस्वरूप हैं। वे ही विविध विषयों के भोग में सुख की तरह प्रतीत होते हैं। सुख का वास्तविक स्रोत स्वयं परमात्मा हैं, जो कि 'क' शब्द का अर्थ हैं। उन सुखस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७२९ –

ॐ कस्मै नमः

विचार करनेयोग्य परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Sole Object of Enquiry.

सर्वपुरुषार्थरूपत्वाद् ब्रह्मैव विचार्यमिति ब्रह्म किम्। अर्थात् सर्व पुरुषार्थरूप होने से ब्रह्म ही विचार करने योग्य है, इसलिए वह किम् हैं। मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष – इन चारों पुरुषार्थ की सिद्धि के लिए कर्म करता है। किन्तु कर्म का फल देनेवले परमात्मा ही होते हैं। इन पुरुषार्थो की सिद्धि जिनके माध्यम से की जाती है, वे परमात्मा कैसे होंगे, वे किस प्रकार हमें कर्मफल प्रदान करते हैं – ये सब बिन्दु विचारणीय है। इसलिएवे 'किम्' कहलाते हैं। उन विचारयोग्य परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७३० –

ॐ यस्मै नमः

‘यत्’ सर्वनाम से ज्ञात परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is 'Which'.

यत् शब्देन स्वत:सिद्ध वस्तु उद्देशवाचिना ब्रह्म निर्दिश्यते इति ब्रह्म यत्, ‘यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते’ इति श्रुतेः। अर्थात् स्वत:सिद्ध वस्तु के वाचक होने से यत् शब्द से ब्रह्म का निर्देश होता है, इसलिए ब्रह्म यत् है। श्रुति कहती है – जिससे ये सब भूत उत्पन्न होते हैं। परमात्मा ‘ऐसे ही हैं’ इस प्रकार से बताए नहीं जा सकते। इसलिए उन्हें ‘यत्’ सर्वनाम से निर्देशित किए जाते हैं। उन ‘यत्’ सर्वनाम से जाने जा रहे परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७३१ -

ॐ श्रीमते नमः

श्रीमान् रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is always endowed with wealth.

यस्य वक्षसि नित्यं वसति श्रीः स श्रीमान् श्री अर्थात् लक्ष्मी जिसके वक्षःस्थल में सर्वदा बसती है, वह श्रीमान् है। लक्ष्मी, परमात्मा की समस्त प्रकार की शक्ति और सामर्थ्य की सूचक हैं। लक्ष्मी भगवान विष्णु के वक्षःस्थल पर विराजमान हैं अर्थात् वे लक्ष्मी को धारण किए हुए हैं। जहां भगवान हैं वहीं लक्ष्मीजी हैं। उन सम्पत्ति एवं समृद्धि से सदैव युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७३२ –

ॐ केशवाय नमः

केशव स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute Lord Krishna

हतः केशी अतः केशवः अर्थात् केशी नामक असुर का वध करने वाले। विष्णु पुराण में विष्णु अवतार श्री कृष्ण से नारदजी का वचन है – 'हे जनार्दन! आपके हाथ से दुष्टचित्त केशी मारा गया है, इसलिए आप लोक में केशव नाम से प्रसिद्ध होंगे।!' असुरों का संहार करके धर्म की रक्षा करने वाले उन केशव रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७३३ -

ॐ पुरुषोत्तमाय नमः

पुरुषोत्तम स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the God who is Purushottam.

पुरुषाणां उत्तमः पुरुषोत्तमः अर्थात् पुरुषों में उत्तम को पुरुषोत्तम कहते हैं। इस लोक में जो कुछ भी नाशवान है, वह क्षर पुरुष है। उसका जो कारण है, वह अक्षर पुरुष है। इन क्षर और अक्षर दोनों की आत्मा की तरह से जो है, वह उन दोनों के दोषों से रहित परमात्मा है। उन्हें पुरुषोत्तम कहा जाता है। भगवान विष्णु स्वयं ही पुरुषोत्तम हैं।

उन पुरुषोत्तम रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७३४ –

ॐ सर्वस्मै नमः

सर्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is all.

सर्वरूपत्वात् सर्वः अर्थात् सम्पूर्ण चर–अचर, स्थूल–सूक्ष्म जगत के कारण रूप होने की वजह से वे ही सर्व की तरह से हैं। जिस प्रकार मिट्टी से बने हुए सब बर्तन मिट्टीरूप ही होते हैं। उसी प्रकार सब कुछ उन्हीं परमात्मा से उत्पन्न होने की वजह से सब रूपों में वे ही अभिव्यक्त हैं।

उन सर्वरूप, सर्वात्मा एवं सर्व अधिष्ठान रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७३५ -

ॐ शर्वाय नमः

संहारक रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is destroyer.

श्रृणाति संहारसमये संहरति इति शर्वः अर्थात् प्रलय काल में जो सब का संहार करते हैं, उन्हें शर्व कहा जाता है। परमात्मा उत्पत्ति एवं स्थिति तो करते ही हैं, किन्तु जीवन्तता बनाए रखने के लिए वे उचित समय में सबका संहार भी करते हैं। पुराने के नाश के उपरान्त ही नए का सृजन होता है। ये सब एक ही ईश्वर के कार्य हैं। उन ईश्वर रूपा भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७३६ -

ॐ शिवाय नमः

परं पवित्रस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Eternally Pure.

निस्त्रैगुण्यतया शुद्धत्वात् शिवः अर्थात् तीनों गुणों से परे होने से शिव है। परमात्मा स्वयं त्रिगुणात्मिका माया के पति होने के कारण अपनी माया के सत्व, रजस् और तमस् नामक तीनों गुणों से एवं उनके दोषों और विकारों से सदैव रहित होते हैं। इस प्रकार वे स्वयं शुद्ध पवित्र स्वरूप रहते हुए, अपनी माया को सत्ता एवं स्फूर्ति प्रदान करते हैं। उन नित्य-शुद्ध, शिव स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७३७ -

ॐ स्थाणवे नमः

स्थिर तत्त्व रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is permenent.

स्थिरत्वात् स्थिरः अर्थात् जो स्थिर रूप है। जिसका भी जन्म होता है, वह सदैव अस्थिर रहता है। जन्म, वृद्धि, विकार, परिवर्तन, क्षय और विनाश, इन षड्विकार रूपा परिवर्तन से सबको गुजरना पड़ता है। परमात्मा वो हैं जिनमें ये कोई भी जन्मादि विकार नहीं होते हैं, अतः वे स्थाणु तुल्य हैं। उन स्थाणु रूप कालातीत लेकिन काल के नियन्ता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७३८ –

ॐ भूतादये नमः

भूतों के आदि कारण रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the first cause of all existing things.

भूतानामादि कारणत्वात् भूतादि। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन समस्त पंच महाभूत की उत्पत्ति हुई है, अर्थात् वे किसी न किसी कारण के कार्यरूपा है। उन सब का जो कारण है, वे परमात्मा हैं। उन सब के प्रथम कारण स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७३९ –

ॐ वरांगाय नमः

सुन्दर अंगवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Elegant Form.

वराणि शोभनानि अंगानि अस्य इति वरांगः। अर्थात् उनके अंग वर अर्थात् सुन्दर हैं, इसलिए वे वरांग हैं। परमात्मा स्वयं पूर्ण तथा आनन्दस्वरूप हैं। परमात्मा की तृप्ति प्रत्येक अभिव्यक्ति अर्थात् अंग के माध्यम से मानों प्रस्फुटित होती है। यह तृप्ति व आनन्द की अभिव्यक्ति ही उनके अंग को सुन्दर बनाते है। इसलिए वे सुन्दर अंगवाले अर्थात् वरांग कहलाते हैं। उन सुन्दर अंगवाले प्रभु को नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७४० -

ॐ चन्दनांगदिने नमः

चन्दनादि से सुशोभित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Adorned with Lovely Armlets.

चन्दनैः आह्लादनैः अंगदैः केयूरैः भूषितः इति चन्दनांगदी। अर्थात् आह्लादित करनेवाले चन्दनों और अंगदों अर्थात् भुजबन्धों से विभूषित हैं, इसलिए वे चन्दनांगदी हैं। प्रेम और आनन्द के मूर्तिमान स्वरूप भगवान स्वयं सुन्दर हैं। भगवान के द्वारा धारण किया गया चन्दन और भुजबन्ध आदि रूप प्रत्येक आभूषण व शृंगार मानों उनकी ओर भी शोभा बढ़ा रहे है। इसलिए वे चन्दनागदी कहलाते हैं। उन चन्दन और भुजबन्धों से सुशोभित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७४१ -

ॐ वीरघ्ने नमः

वीरों का हनन करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Slayer of Valiant Heroes.

धर्मत्राणाय वीरान् असुरमुख्यान् हन्ति इति वीरहा अर्थात् धर्म की रक्षा के लिए प्रमुख दैत्यवीरों का हनन करते हैं, इसलिए वीरहा हैं। धर्म रक्षा हेतु भगवान ने स्वयं अनेकों अवतार धारण करके अधर्मि हिरण्याक्ष, हिरण्यकश्यप, कंस, रावण जैसे अनेकों बहुत ही बलशाली दैत्यवीरों का हनन किया था। इसलिए वे वीरों का हनन करनेवाले वीरघ्न कहलाते हैं।

उन वीरघ्न परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७४२ –

ॐ विषमाय नमः

विलक्षणस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Peerless.

समो नास्य विद्यते सर्वविलक्षणत्वाद् इति विषमः; 'न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यः' इति भगवद्वचनात्। अर्थात् सबसे विलक्षण होने के कारण भगवान् के समान कोई नहीं है, इसलिए वे विषम हैं। गीता में कहा है – 'तुम्हारे समान ही कोई नहीं है, फिर अधिक तो हो ही कहां से?' भगवान सब से विलक्षण हैं, उनके समान अथवा उनसे अधिक कोई अन्य है ही नहीं। क्योंकि अन्य सब जिस माया से उत्पन्न हैं, उस माया के वे नियन्ता व स्वामी हैं। उन विषम स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७४३ –

ॐ शून्याय नमः

विशेषताओं से रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Void.

सर्वविशेषरहितत्वात् शून्यवत् शून्यः अर्थात् समस्त विशेषों से रहित होने के कारण भगवान् शून्य के समान शून्य हैं। किसी के भी अस्तित्व का ज्ञान उसकी विशिष्टताओं के माध्यम से होता है। परमात्मा समस्त विशेषताओं के अधिष्ठानभूत तत्त्व, स्वयं निर्विशेष स्वरूप होने से वे शून्यवत् हैं। इसलिए वे शून्य कहलाते हैं।

उन सर्व विशेषताओं से रहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७४४ -

ॐ घृताशिषे नमः

आशिष की अपेक्षारहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Devoid of Desires.

घृता विगलिता आशिषः प्रार्थना अस्य इति घृताशीः अर्थात् भगवान् की आशिष अर्थात् प्रार्थनाएं घृत यानी विगलित हैं, इसलिए वे घृताशी हैं। जिन्हें कुछ चाहिए हो, उन्हें उस संकल्प की पूर्ति हेतु किसी के आशिर्वाद की तथा प्रार्थना करने की आवश्यकता होती है। पूर्णकाम परमात्मा ही उन सबके संकल्प की पूर्ति करते हैं। स्वयं पूर्णकाम होने की वजह से उन्हें न किसी के आशिर्वाद की आकांक्षा है, और सर्वोपरि होने से प्रार्थना भी अनावश्यक है। इसलिए वे घृताशिष हैं। उन आशिष की अपेक्षारहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७४५ –

ॐ अचलाय नमः

अचलस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Motionless.

न स्वरूपात्, न सामर्थ्यात्, न च ज्ञानादिकाद्–गुणात् चलनं विद्यते अस्य इति अचलः अर्थात् स्वरूप से, सामर्थ्य से अथवा ज्ञानादि गुणों से विचलित नहीं होते हैं, इसलिए वे अचल हैं। परमात्मा कालातीत, अजन्मादि स्वरूप होने से, तथा उनसे भिन्न किसीका भी अभाव होने से, वे अपने स्वरूप से कभी भी चलित नहीं होते हैं। वे ही समस्त ज्ञान, गुण और शक्ति के अधिष्ठान हैं। इसलिए वे अचल हैं। उन अचल स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७४६ -

ॐ चलाय नमः

वायुरूप से प्रवाहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Moving.

वायुरूपेण चलति इति चलः अर्थात् वायुरूप से चलते हैं, इसलिए वे चल हैं। यह सम्पूर्ण जगत ईश्वर की विराट रूप से अभिव्यक्ति है। जिसके अन्तर्गत वायु जो सतत चलायमान रहता है, वह भी परमात्मा के विराट शरीर का ही एक अंग है, इसलिए वायु रूप से सतत प्रवाहित होने के कारण परमात्मा चल कहलाते हैं।

उन वायु रूप से सतत प्रवाहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७४७ –

ॐ अमानिने नमः

अभिमान रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Modest.

अनात्मवस्तुषु आत्माभिमानो नास्ति अस्य स्वच्छसंवेदना कृतेः इति अमानी अर्थात् शुद्ध ज्ञानस्वरूप भगवान् को अनात्म वस्तुओं में आत्माभिमान नहीं है, इसलिए वे अमानी हैं। भगवान में अपनी सच्चिदानन्द स्वरूपता का ज्ञान बहुत स्पष्टरूप से विराजमान होने के कारण वे जीव की तरह अनात्मा से तादात्म्य नहीं करते हैं। इसलिए उनमें सीमित उपाधि तथा विशिष्टता का अभिमान नहीं है। इसलिए वे अमानि कहलाते हैं।

उन अभिमान से रहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७४८ -

ॐ मानदाय नमः

आत्माभिमान देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Bestower of Honour.

स्वमायया सर्वेषाम् अनात्मसु आत्माभिमानं ददाति इति मानदः अर्थात् अपनी माया से सबको अनात्मा में आत्माभिमान देते हैं, इसलिए वे मानद हैं। जीव अपने अज्ञान की वजह से अनात्मा में आत्मबुद्धि करता है। इस जीव को मोहित करनेवाली परमात्मा की मायाशक्ति ही होती है, जिसकी वजह से वह अनात्मा में आत्मबुद्धि रखकर जीता है। इस प्रकार उसे अनात्मा में मानों की सीमित करते हैं, इस प्रकार वे मानद हैं। उन मानद परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७४९ –

ॐ मान्याय नमः

मान्नीय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Venerable.

सर्वैः माननीयः पूजनीयः सर्वेश्वरत्वाद् इति मान्यः अर्थात् सब के ईश्वर होने से सबके माननीय, पूजनीय हैं; इसलिए मान्य हैं। समस्त जगत के स्वामी जगदीश्वर, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्व समर्थ होने के कारण वे पूजनीय हैं। इसलिए वे मान्य अर्थात् माननीय कहलाते हैं।

उन पूजनीय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७५० –

ॐ लोकस्वामिने नमः

समस्त लोकों के स्वामी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Lord of Universe.

चतुर्दशानां लोकानाम् ईश्वरत्वात् लोकस्वामी अर्थात् चौदहों लोकों के स्वामी होने से वे लोकस्वामी हैं। पूरा ब्रह्माण्ड पाप–पुण्य रूप कर्म के अनुसार चौदह लोक में विभाजित जाना जाता है। सभी लोकों की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करनेवाले तथा जीवों के कर्मानुसार फल देकर, उन पर शासन करनेवाले स्वयं परमात्मा ही हैं।

उन समस्त लोकों के स्वामी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७५१ -

ॐ त्रिलोकधृते नमः

तीनों लोक को धारण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Supporter of the 3 Worlds.

त्रीन् लोकान् धारयति इति त्रिलोकधृक् अर्थात् तीनों लोकों को धारण करते हैं, इसलिए त्रिलोकधृक् हैं। तीन प्रसिद्ध लोक अर्थात् भूः, भुवः और स्वः है। इसके अलावा लोक अर्थात् अनुभव के क्षेत्र। हमारी जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति रूप तीनों अवस्थाएं तीन लोक हैं। उन तीनों लोकों का अधिष्ठानभूत तत्त्व चेतन सत्ता है, वही परमात्मा हैं। इस प्रकार परमात्मा ही तीनों लोकों को धारण करनेवाले होने से वे त्रिलोकधृत् हैं।

उन तीनों लोकों के धारण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७५२ –

ॐ सुमेधसे नमः

सुन्दर मेधावाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Pure Intelligence.

शोभना मेधा प्रज्ञास्य इति सुमेधा अर्थात् भगवान् की मेधा अर्थात् प्रज्ञा सुन्दर है, इसलिए सुमेधा हैं। मेधा ज्ञान को धारण करने के सामर्थ्य को कहते हैं। भगवान समस्त सृष्टि में जो कुछ भी ज्ञान है, उन सब की निधिरूप अर्थात् समस्त ज्ञान को धारण किए हुए हैं। इसलिए वे सुमेधा हैं।

उन सुन्दर मेधावाले भगवान को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७५३ –

ॐ मेधजाय नमः

यज्ञ में प्रकट् परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Born of Sacrifices.

मेधे अध्वरे जायते इति मेधजः। अर्थात् मेध अर्थात् यज्ञ में प्रकट् होते हैं, इसलिए मेधज हैं। मेध अर्थात् अश्वमेध आदि यज्ञ। इन यज्ञों में अग्नि को प्रज्ज्वलित करके उसमें परमात्मा का आवाहन किया जाता है। इस प्रकार परमात्मा मेध अर्थात् यज्ञ में प्रकट् होते हैं, इसलिए वे मेधज कहलाते हैं।

यज्ञ में प्रकट् परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७५४ –

ॐ धन्याय नमः

पूर्णकाम परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Fortunate.

कृतार्थो धन्यः। अर्थात् कृतार्थ होने से धन्य हैं। परमात्मा पूर्णकाम हैं। वे पूर्णस्वरूप होने से उनमें देश, काल, वस्तु की किसी भी प्रकार की सीमाएं नहीं है। जो पूर्ण होता है, उसे जीवन में कुछ भी कर्म के द्वारा सिद्ध करना शेष नहीं होता है, वे ही धन्य कहलाते हैं। परमात्मा भी पूर्णस्वरूप होने से, उन्हें कर्म के द्वारा कुछ भी सिद्ध करना नहीं है। इसलिए परमात्मा धन्य हैं।

उन पूर्णकाम परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७५५ –

ॐ सत्यमेधसे नमः

शाश्वत ज्ञानवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Infallible Intelligence.

सत्या अवितथा मेधा अस्य इति सत्यमेधाः अर्थात् भगवान की मेधा सत्य अर्थात् अमोघ है, इसलिए वे सत्यमेधा हैं। परमात्मा का ज्ञान सत्य है। जिस प्रकार सूर्य को बादल छिपाने में समर्थ नहीं होता है, किन्तु बादल का होना सूर्य की वजह से जाना जाता है। वैसे ही परमात्मा ज्ञानस्वरूप होने से उनमें अज्ञान तथा तज्जनित मोह नहीं होता है तथा नहीं उसकी सम्भावना होती है। किन्तु उसका भान उनकी ज्ञानस्वरूपता की वजह से होता है। इसलिए वे सत्यमेधा हैं। उन शाश्वत ज्ञानवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७५६ -

ॐ धराधराय नमः

पृथ्वी को धारण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Substratum of the Earth.

अंशैरशेषैः शेषाद्यैरशेषां धरां धारयन् धराधरः अर्थात् शेष आदि अपने सम्पूर्ण अंशों से समस्त पृथ्वी को धारण करते हैं, इसलिए धराधर हैं। पुराणों के अनुसार यह पृथ्वी आदि सभी लोक शेषनाग के द्वारा उनके मस्तक पर धारण हुए है। परमात्मा स्वयं शेषनाग के रूप में स्थित रहकर पृथ्वी आदि समेत समस्त लोकों को धारण करते हैं, इसलिए वे धराधर कहलाते हैं।

उन पृथ्वी को धारण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७५७ –

ॐ तेजोवृषाय नमः

तेज की वृष्टि करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Showerer of Radiance.

तेजसाम् अम्भसां सर्वदा आदित्यरूपेण वर्षणात् तेजोवृषः अर्थात् आदित्य रूप से सदा तेज अर्थात् जल की वर्षा करते हैं, इसलिए तेजोवृष हैं। भगवान स्वयं अन्तरिक्ष में सूर्य रूप से प्रकाशित होकर सतत प्रकाश तथा अग्नि की वृष्टि करते हैं, जिसकी वजह से बादल निर्मित होकर जल की वर्षा करता है। इसलिए वे तेजोवृष कहलाते हैं।

उन प्रकाश और जल की वर्षा करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७५८ –

ॐ द्युतिधराय नमः

देहगत कान्तिवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Radiant.

द्युतिं अंगगतां कान्तिं धारयन् द्युतिधरः अर्थात् द्युति अर्थात् देहगत कान्ति को धारण करने के कारण द्युतिधर हैं। परमात्मा की चेतन स्वरूपता ही प्रत्येक जीव के शरीरों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। इसी कारण जड़ शरीर जीवन्त हो उठता है। इस प्रकार मानों परमात्मा ही चेतनस्वरूपता से शरीर की जीवन्तता की तरह अभिव्यक्त होते हैं। इसलिए वे द्युतिधर कहलाते हैं। उन देहगत कान्ति को धारण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७५९ -

ॐ सर्वशस्त्रभृतां वराय नमः

शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Greatest Warrior.

सर्वशस्त्रभृतां श्रेष्ठः सर्वशस्त्रभृतां वरः अर्थात् समस्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ होने के कारण वे सर्वशस्त्रभृतां वर हैं। वह ही श्रेष्ठ शस्त्रधारी होता है, जो स्वार्थपूर्ति हेतु नहीं, किन्तु अन्य की रक्षा हेतु शस्त्र धारण करता है। भगवान जगत में धर्म की रक्षा हेतु तथा अधर्म का नाश करने के लिए ही शस्त्र धारण करते हैं। इसलिए वे सभी शस्त्रधारियों में सर्वश्रेष्ठ हैं।

उन शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७६० -

ॐ प्रग्रहाय नमः

प्रग्रहरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Controller

धावतो विषयारण्ये दुर्दान्तेन्द्रियवाजिनः तत्प्रसादेन रश्मिनेव बध्नाति इति प्रग्रहः अर्थात् विषयरूपी वन में दौड़ते हुए इन्द्रियरूपी दुर्दम्य घोडों को रस्सी के समान अपनी कृपा से बांध लेते हैं, इसलिए वे प्रग्रह हैं। जीव की इन्द्रियां रूप घोड़े स्वभावतः ही बहिर्मुख होकर विषयों की ओर भागते हैं। जब कोई जीव अन्तर्मुख होकर भगवान की शरण में जाता है, तब भगवान की कृपा से वह अपनी इन्द्रियों को निगृहीत करने में सक्षम होता है, इस प्रकार मानों भगवत्कृपा रूप लगाम से इन्द्रियां रूपी घोड़े वश में किए जाते हैं। इसलिए वे प्रग्रह रूप हैं। उन प्रग्रहरूप परमात्मा को नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७६१ –

ॐ निग्रहाय नमः

सब का निग्रह करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Absorber.

स्ववशेन सर्वं निगृह्णाति इति निग्रहः अर्थात् अपने अधीन करके सब का निग्रह करते हैं, इसलिए निग्रह हैं। भगवान सभी जीवों के कर्मफलदाता हैं। जीव को अपने पुण्य और पाप रूप कर्म का फल प्राप्त होता है। इसमें कभी भी किसी प्रकार की अव्यवस्था की सम्भावना नहीं होती है। इसी सिद्धान्त के अनुसार जीव कर्मफलदाता ईश्वर को ध्यान में रखकर धर्ममार्ग का अनुसरण करता है। इस प्रकार मानों ईश्वर ही जीवों को निगृहीत करते हैं। सब का निग्रह करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७६२ -

ॐ व्यग्राय नमः

इच्छापूर्ति करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Fulfiller of Desires.

भक्तानाम् अभीष्टप्रदानेषु व्यग्रः। अर्थात् भक्तों को इच्छित फल देने के लिए उत्सुक हैं, इसलिए वे व्यग्र कहलाते हैं। भक्त के जीवन में प्रेम का आस्पद भगवान ही होते हैं। इसलिए उनकी प्रत्येक इच्छा स्वकेन्द्रिता से रहित तथा जगत हित के लिए ही होती है। जगत में धर्म-संस्थापना के इच्छुक भगवान ऐसे भक्त की इच्छापूर्ति करने हेतु अवश्य प्रेरित होते हैं। इसलिए वे व्यग्र कहलाते हैं।

उन इच्छित फल देने के इच्छुक भगवान को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७६३ -

ॐ नैकश्रृंगाय नमः

चार सींगवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has Many Horns.

चतुः श्रृंगो नैकश्रृंगः अर्थात् चार सींगवाले होने के कारण नैकश्रृंग हैं। श्रुति बताती हैं कि परमात्मा चार सींगवाले हैं। चार सींग से अभिप्राय चार अवस्थाओं से हैं। यह चार अवस्थाओं में से तीन अवस्थाएं जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति है, जिसे जीव प्रतिदिन अनुभव करता है। चतुर्थ तुरीय अवस्था जो कि निर्विशेष चेतन स्वरूपता है। यह तीनों अवस्थाओं को व्याप्त करके स्थित है। इस प्रकार परमात्मा की चार अवस्थाएं ही चार सींग कहलाती है। उन चार सींगवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७६४ -

ॐ गदाग्रजाय नमः

मन्त्र से प्रकट परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Invoked through Mantras.

निगदेन मन्त्रेणाग्रे जायते इति गदाग्रजः। अर्थात् निगद मन्त्र को कहते है। मन्त्र से पहले ही प्रकट होते हैं, इसलिए वे गदाग्रज कहलाते हैं। जब कोई यज्ञ करने के लिए प्रवृत्त होता है, तो सर्व प्रथम यज्ञकुण्ड में अग्नि प्रज्ज्वलित करके परमात्मा को मंत्रोच्चारण के माध्यम से आवाहित किया जाता है। उसके उपरान्त ही यज्ञ की आगे की प्रक्रिया सम्पन्न होती है। इसलिए वे गदाग्रज कहलाते हैं। उन मंत्रों के द्वारा प्रकट परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७६५ -

ॐ चतुर्मूर्तये नमः

चार मूर्तिवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Four Forms.

चतस्रो मूर्तयो विराट्सूत्र अव्याकृत तुरीयात्मानो अस्य इति चतुर्मूर्तिः अर्थात् विराट्, सूत्रात्मा, अव्याकृत और तुरीय रूप भगवान् की चार मूर्तियां हैं, इसलिए वे चतुर्मूति हैं। जगत रूप से अभिव्यक्त परमात्मा की क्रम से चार प्रकार से अभिव्यक्तियां होती है। सर्व प्रथम वे निर्विशेष रूप में स्थित तुरीयरूप होते है। उसके उपरान्त मायाशक्ति को धारण करके वे अव्याकृत, तत्पश्चात् सृष्टि के संकल्प से युक्त सूत्रात्मा होते हैं। अन्त में इस जगत रूप विराट शरीरधारी होते हैं। ऐसे चार मूर्ति-धारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७६६ -

ॐ चतुर्बाहवे नमः

चार भुजाधारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Four Arms.

चत्वारो बाहवो अस्य इति चतुर्बाहुः। अर्थात् भगवान् की चार भुजाएं हैं, इसलिए वे चतुर्बाहु हैं। परमात्मा भक्तों पर करुणा करके उनके उद्धार हेतु अपने सगुणरूप में प्रकट् होते हैं, जिसकी उपासना करके भक्त शुद्धचित्त होकर उनसे ऐक्य को प्राप्त कर सके। चार भुजावाला भगवान विष्णु का चतुर्भुज रूप भी परमात्मा का उपास्य रूप है। उन चारों भुजाओं में शंख, चक्र, गदा और पद्म होते है।

उन चार भुजाधारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७६७ -

ॐ चतुर्व्यूहाय नमः

चतुर्व्यूह परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Fourfold Manifestations.

'शरीरपुरुषश्छन्द:पुरुषो वेदपुरुषो महापुरुषः' इति बह्वृचोपनिषदुक्ताः चत्वारः पुरुषाः व्यूहा अस्य इति चतुर्व्यूहः। अर्थात् बह्वृचोपनिषद् में कहे हुए 'शरीरपुरुष, छन्द:पुरुष, वेदपुरुष और महापुरुष' ये चार पुरुष भगवान के व्यूह हैं, इसलिए वे चतुर्व्यूह हैं। व्यूह युद्ध के मैदान में की गई व्यवस्था को कहा जाता है। इस संसार रूप मैदान में भगवान के यह शरीर, छन्द, वेद और सब का आधारभूत परंपुरुष परमात्मा व्यूह की तरह से है। जिसकी वजह से संसार की व्यवस्था सुचारु रूप से संचालित होती है। उन चतुर्व्यूह परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७६८ -

ॐ चतुर्गतये नमः

चार वर्णाश्रमों की परंगतिरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Ultimate Goal of the Four Varnas & Ashramas.

आश्रमाणां वर्णानां चतुर्णां यथोक्तकारिणां गतिः चतुर्गतिः। अर्थात् विधि के अनुसार चलनेवाले चार आश्रम और चार वर्णों की गति हैं, इसलिए भगवान् चतुर्गति हैं। सृष्टि के सुव्यवस्थित संचालन हेतु भगवान ने गुण और कर्म के अनुसार चार वर्ण और आश्रम की व्यवस्था बनाई है तथा प्रत्येक के वर्ण और आश्रम के अनुरूप कर्म विहित किए गए है। जिसका परं गन्तव्य परमात्मा ही है। उन चार वर्ण और आश्रम की परं गतिरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७६९ –

ॐ चतुरात्मने नमः

अन्तःकरणचतुष्टय से युक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Fourfold Inner Equipment.

मनोबुद्धि–अहंकारचित्ताख्यान् अन्तःकरणचतुष्टया–त्मकत्वाद् चतुरात्मा। अर्थात् मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त नामक चार अन्तःकरणों से युक्त हैं, इसलिए भगवान् चतुरात्मा हैं। वस्तुतः परमात्मस्वरूप होते हुए भी अज्ञान से युक्त जीव अपने आपको विपरीत मानता है। जीवरूप में स्थित परमात्मा ही मन, बुद्धि, अहंकार और चित्तरूप अन्तःकरण को अपनी आत्मा मानकर जीता है। इसलिए वे चतुरात्मा कहलाते हैं। उन अन्तःकरण चतुष्टय से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७७० -

ॐ चतुर्भावाय नमः

चतुर्भाव रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Source of the Four Aspirations.

धर्मार्थकाममोक्षाख्यं पुरुषार्थचतुष्टयं भवति उत्पद्यते अस्मादिति चतुर्भावः अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष यह चार पुरुषार्थ भगवान् से उत्पन्न होते हैं, इसलिए वे चतुर्भाव हैं। जीव का संसार के बन्धन से मुक्ति तक की यात्रा का आरम्भ कर्म के क्षेत्र से होता है। उनमें निहित अर्थ और काम की इच्छा की पूर्ति हेतु धर्म की व्यवस्था तथा इन तीनों पुरुषार्थो की सिद्धि होने पर मोक्ष रूप पुरुषार्थ की सिद्धि की दिशा में यात्रा होती है। यह सभी पुरुषार्थ परमात्मा से ही उत्पन्न होने से वे चतुर्भाव हैं। उन चतुर्भाव रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७७१ -

ॐ चतुर्वेदविदे नमः

चारों वेदों के ज्ञाता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Knower of 4 Vedas.

यथावद् वेत्ति चतुर्णा वेदानाम् अर्थमिति चतुर्वेदविद् अर्थात् चारों वेदों के अर्थ को सही रूप में जानते हैं, इसलिए परमात्मा चतुर्वेदवित् हैं। जगत की उत्पत्ति के साथ चारों वेदों की उत्पत्ति परमात्मा से ही हुई है। अर्थात् चारों वेद सर्वज्ञ परमात्मा के द्वारा प्रदत्त होने की वजह से परमात्मा वेदों के ज्ञाता हैं। इसलिए वे चतुर्वेदविद् कहलाते हैं।

उन चारों वेदों के ज्ञाता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७७२ -

ॐ एकपदे नमः

जगत के अधिष्ठानभूत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Nucleus of Universe.

एकः पादः अस्य इति एकपात्; 'पादो अस्य विश्वा भूतानि' इति श्रुतेः अर्थात् भगवान का एक ही पाद में विश्व स्थित है, इसलिए वे एकपात् हैं। श्रुति कहती है - सम्पूर्ण भूत इसके एक पादमात्र हैं। विश्व को परमात्मा का एक पाद बतलाने का अभिप्राय परमात्मा को जगत के आधारभूत तथा जगत से परे दर्शाना है। सम्पूर्ण जगत परमात्मा के एक ही पाद रूप हैं, परमात्मा उन सबसे परे, उनके अधिष्ठानभूत हैं।

उन सबके अधिष्ठानभूत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७७३ -

ॐ समावर्ताय नमः

संसारचक्र को घुमानेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Revolver of World.

संसारचक्रस्य सम्यक् आवर्तकः इति समावर्तः अर्थात् संसार-चक्र को भली प्रकार घुमानेवाले हैं, इसलिए वे समावर्त हैं। इस संसार का चक्र नियमानुसार सतत चलता है। उसके नियामक एवं नियन्ता स्वयं भगवान ही हैं। उन्हींसे नियन्त्रित होकर यह संसारचक्र सतत घुमता रहता है, इसलिए वे संसारचक्र को घुमानेवाले समावर्त कहलाते हैं। उन संसारचक्र को घुमानेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७७४ –

ॐ निवृत्तात्मने नमः

विषयों से निवृत्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Free & Detached.

निवृत्त आत्मा मनो विषयेभ्यो अस्य इति निवृत्त आत्मा अर्थात् उनकी आत्मा अर्थात् मन विषयों से निवृत्त है, इसलिए वे निवृत्तात्मा हैं। स्वयं को एक क्षुद्र जीव मानने के उपरान्त ही मन विषयों में से आनन्द लेकर तृप्त होना चाहता है। किन्तु परमात्मा पूर्णकाम अर्थात् आनन्दस्वरूप होने से वे विषयों के प्रति आनन्द की प्राप्ति के लिए प्रवृत्त नहीं होते हैं। इसलिए वे निवृत्तात्मा कहलाते हैं। उन विषयों से निवृत्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७७५ -

ॐ दुर्जयाय नमः

दुर्जय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Invincible.

जेतुं न शक्यते इति दुर्जयः अर्थात् किसी से जीते नहीं जा सकते, इसलिए वे दुर्जय हैं। भगवान सर्व समर्थ, सर्व शक्तिमान हैं। उनमें अनुलनीय बल एवं पराक्रम है। जगत में कहीं पर भी किसी में भी बल वा पराक्रम होता है, तो वह परमात्मा की ही अंश रूप से अभिव्यक्ति है। इसलिए वे किसी से भी जीते नहीं जा सकते है।

उन दुर्जय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७७६ –

ॐ दुरतिक्रमाय नमः

उल्लंघित नहीं होनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Insurmountable.

भयहेतुत्वाद् अस्य आज्ञां सूर्यादयो न अतिक्रामन्ति इति दुरतिक्रमः; 'भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्यः। भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पंचमः' इति श्रुतेः। अर्थात् भय के कारण सूर्य आदि भी उनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करते, इसलिए वे दुरतिक्रम हैं। श्रुति भी बताती है कि, 'उनके भय से अग्नि तथा सूर्य तपते हैं, इन्द्रदेवता, वायु तथा मृत्यु भी उन्हींके भय से अपना-अपना कार्य करते हैं।' परमात्मा सबके नियन्ता हैं, उनकी आज्ञा का कोई उलंघन नहीं कर सकता, इसी वजह से सृष्टि का संचालन होता है। उन दुरतिक्रम परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७७७ –

ॐ दुर्लभाय नमः

दुर्लभ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Attained with Great Effort.

दुर्लभया भक्त्या लभ्यत्वात् दुर्लभः। ‘भक्त्या लभ्यः त्वनन्यया’ इति भगवद्वचनात्। अर्थात् दुर्लभ भक्ति से प्राप्त होने योग्य होने के कारण भगवान् दुर्लभ हैं। जब तक जीव संसार में आसक्त रहकर संसारी उपलब्धियों के प्रति महत्व से युक्त है, तब तक वह भगवान की प्राप्ति हेतु पात्र नहीं बनता है। सात्विक मन के द्वारा, अनन्यभक्ति भाव से युक्त होकर परमात्मा की प्राप्ति की तीव्र इच्छा होने पर ही प्राप्त होते है। जो कि अत्यन्त दुर्लभ है। इसलिए परमात्मा दुर्लभ कहे जाते है। उन दुर्लभ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७७८ –

ॐ दुर्गमाय नमः

दुर्गमस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Inaccessible.

दुःखेन गम्यते ज्ञायते इति दुर्गमः अर्थात् दुःख (कठिनता) से गम्य अर्थात् जाने जाते हैं, इसलिए वे दुर्गम हैं। परमात्मा सर्वत्र, सब की अपनी आत्मा होते हुए भी अज्ञानवशात् जीव उसे नहीं जानता है। जीव की बहिर्मुखता और बाह्य विषयक अनुभूति की आकांक्षा ही उन्हें परमात्मा से विमुख करके अन्तर्मुख होने नहीं देती है। इस कारण से वह परमात्मविषयक ज्ञान प्राप्त करके स्वरूप के अज्ञान को दूर नहीं कर पाता है। इसलिए वे दुर्गम कहे जाते हैं। उन दुर्गम स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७७९ –

ॐ दुर्गाय नमः

अनेकों विघ्नों से घिरे हुए परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Fortified.

अन्तरायप्रतिहतैः दुःखाद् अवाप्यत इति दुर्गः अर्थात् नाना प्रकारके विघ्नों से आहत हुए पुरुषों द्वारा कठिनता से प्राप्त किए जाते हैं, इसलिए दुर्ग हैं। जिस प्रकार दुर्ग अर्थात् किले में प्रवेश हेतु अनेकों विघ्नों को हटाने पड़ते है। उसी प्रकार परमात्मा भी मानों अज्ञान और उससे जनित संसार से घिरे हुए हैं। इन विघ्नों को दूर करने में बहुत आयास लगता है। जो भी व्यक्ति इन विघ्नों को दूर करने में सफल होता है, वही परमात्मा को पा लेता है। इसलिए वे दुर्ग कहे जाते हैं। उन अनेकों विघ्नों से घिरे हुए परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७८० -

ॐ दुरावासाय नमः

दुरावास रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Not Easy to Lodge.

दुःखेन आवास्यते चित्ते योगिभिः समाधौ इति दुरावासः अर्थात् समाधि में योगिजन बड़ी कठिनता से चित्त में भगवान् को बसा पाते हैं, इसलिए वे दुरावास हैं। परमात्मा सब के हृदय में आत्मा की तरह से वास करते हैं। किन्तु अज्ञानवशात् जीव उन्हें नहीं देख पाता है। योगीजन सब से संन्यस्त होकर अन्तर्मुख होते है, तब ही मानों हृदय में बसा पाते हैं, अर्थात् हृदय में बसे हुए परमात्मा का साक्षात्कार कर पाते हैं। इसलिए वे दुरावास कहलाते हैं। उन दुरावास रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७८१ -

ॐ दुरारिघ्ने नमः

अधर्मियों के विनाशक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Slayer of Demons.

दुरारिणो दानवादयः तान् हन्ति इति दुरारिहा अर्थात् दानवादि दुरारियों अर्थात् दुष्ट मार्ग पर चलनेवालों को मारते हैं, इसलिए दुरारिहा है। भगवान् की दृष्टि में दुष्ट शत्रु वही होता है, जो अधर्म के मार्ग पर स्वयं चलता है, तथा धर्माचारियों के लिए व्यवधान बनता हैं। उन अधर्मी दानवों को मारने के लिए स्वयं अवतरित होकर उसका विनाश करते हैं, इसलिए वे दुरारिहा कहलाते हैं। उन दुष्ट मार्ग पर चलनेवालों के विनाशक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७८२ –

ॐ शुभांगाय नमः

सुन्दर मन से ध्येय परमात्मा को नमस्कार।

Naman to the Pure, realized by the Pure.

शोभनैः अंगैः ध्येयत्वात् शुभांगः अर्थात् सुन्दर अंगों से ध्यान किए जाने के कारण शुभांग हैं। परमात्मा का ध्यान करने के लिए जिन अंग की आवश्यकता होती है, वह है निष्कपट, भक्तिसभर, सुन्दर मन। जिनका मन ऐसा सुन्दर होता है, वह ही परमात्मा का ध्यान करने में सक्षम होता है। दुषित मन संसारी विषयों से ही विरत नहीं हो पाता है, इसलिए उसके द्वारा परमात्मा का ध्यान सम्भव नहीं है।

उन सुन्दर मन से ध्यान करने योग्य परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७८३ -

ॐ लोकसारंगाय नमः

लोकों के सारभूत तत्त्व के ज्ञाता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Essence of World.

लोकानां सारं सारंगवद् भृंगवद् गृह्णाति इति लोकसारंगः अर्थात् लोकों का जो सार है, उसे भ्रमर के समान ग्रहण करते हैं, इसलिए लोकसारंग हैं। समस्त लोक का सारभूत तत्त्व परमात्मा ही हैं। जो स्थूल बुद्धि वाले है, वे नामरूप को ही सत्य मानकर जीते है, किन्तु सूक्ष्म बुद्धिवाले भ्रमर के समान लोकों के सारभूत तत्त्व परमात्मा को आत्मा रूप से जानते हैं। अर्थात् सारभूत परमात्मा को जाननेवाले परमात्मा से भिन्न नहीं होते है। अतः वे लोकसारंग कहलाते हैं। उन भ्रमर के समान सार को ग्रहण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७८४ –

ॐ सुतन्तवे नमः

सुन्दर जगत की तरह विस्तृत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Beautifully Expanded.

शोभनः तन्तुः विस्तीर्णः प्रपंचो अस्य इति सुतन्तुः अर्थात् भगवान् का तन्तु यह सुन्दर जगत है, इसलिए वे सुतन्तु हैं। तन्तु अर्थात् सन्तति। यह सुन्दर विस्तृत जगत परमात्मा से ही उत्पन्न होकर विस्तार को प्राप्त हुआ होने के कारण वह परमात्मा की सन्तान है। ऐसे सुन्दर सन्ततिरूप जगत की तरह उत्पन्न होने से वे सुतन्तु कहलाते हैं। उन सुन्दर जगतरूप से विस्तृत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७८५ -

ॐ तन्तुवर्धनाय नमः

जगत का वर्धन करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Progenitor.

तम् एनं तन्तुं वर्धयति छेदयति इति वा तन्तु वर्धनतः अर्थात् उसी तन्तु को बढ़ाते या काटते हैं, इसलिए भगवान् तन्तुवर्धन हैं। यह जगत रूपी सन्तति परमात्मा से ही उत्पन्न होती है, वे ही वर्धन करते हैं, तथा अन्त में सबको अपने अन्दर समेट लेते हैं अर्थात् नष्ट कर देते हैं। इस प्रकार प्रजा का विस्तार और उसको समेटने के कारण वे तन्तुवर्धन कहलाते हैं। उन जगत का वर्धन तथा छेदन करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७८६ -

ॐ इन्द्रकर्मणे नमः

ऐश्वर्यमय कर्म के कर्ता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Performer of Glorious Actions.

इन्द्रस्य कर्म इव कर्म अस्येति इन्द्रकर्मा, ऐश्वर्यकर्मा इत्यर्थः अर्थात् इन्द्र के कर्म के समान ही भगवान का कर्म है, इसलिए वे इन्द्रकर्मा अर्थात् ऐश्वर्यकर्मा हैं। भगवान् के कर्म दिव्य है, वे सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लय करते हैं, सभी जीवों के पाप और पुण्यात्मक कर्मो का फल भी देते हैं। वे सब कुछ करते हुए भी कर्तृत्व के अभिमान से रहित, उसके फल से अलिप्त रहते हैं। यह ही उनके कर्म की दिव्यता है। इसलिए वे इन्द्रकर्मा कहलाते हैं।

उन ऐश्वर्यमय कर्म के कर्ता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७८७ -

ॐ महाकर्मणे नमः

महान कर्म करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Accomplisher of Great Deeds.

महान्ति वियदादीनि भूतानि कर्माणि कार्याणि अस्येति महाकर्मा अर्थात् भगवान् के कर्म आकाशादि पंचभूत महान् हैं, इसलिए वे महाकर्मा हैं। आकाशादि पंच महाभूत तथा उससे निर्मित यह जगत अपने आपमें सम्पूर्ण है। उसमें से एक भी घटक को हटा दिया जाए, तो सृष्टि का प्रलय हो सकता है। तथा उसमें कुछ भी कमी भी नहीं है कि जिससे वह और पूर्ण हो सके। ऐसे महान जगत की उत्पत्ति रूप कर्म करने की वजह से वे महाकर्मा कहलाते हैं। उन महान कर्म करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

\- ७८८ -

ॐ कृतकर्मणे नमः

पूर्णकाम परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Accomplished Deeds.

कृतमेव सर्वं कृतार्थत्वात्, न कर्तव्यं किंचिदपि कर्मास्य विद्यते इति कृतकर्माः अर्थात् कृतार्थ होने के कारण भगवान् का सब कुछ किया हुआ ही है, उन्हें कोई कर्म करना नहीं हैं, इसलिए वे कृतकर्मा हैं। जीव के कर्म के पीछे प्रेरक उसकी अपूर्णता से जनित इच्छा होती है। किन्तु ईश्वर पूर्णकाम हैं, इसलिए उनमें कोई भी इच्छा नहीं है, जिसे पूर्ण करने के लिए उसे कर्म करना पडे। मानों उन्होंने जो कुछ करने योग्य था, वह कर लिया है, इसलिए वे कृतकर्मा कहलाते हैं। उन पूर्णकाम परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७८९ -

ॐ कृतागमाय नमः

वेदों के निर्माता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Author of the Vedas.

कृतो वेदात्मक आगमो येन इति कृतागमः 'अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद् यदृग्वेदः' इत्यादि श्रुतेः अर्थात् उन्होंने वेदरूप आगम बनाया है, इसलिए वे कृतागम हैं। श्रुति कहती है कि, 'इस महाभूत का निःश्वास ही ऋग्वेद है।' सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही सभी वेद परमात्मा की सांस की तरह सहज रूप से प्रकट् हुए थे। इसलिए वे वेद रूप आगम को बनानेवाले कृतागम कहलाते हैं। उन वेदों के निर्माता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७९० -

ॐ उद्भवाय नमः

स्वेच्छा से जन्में परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Manifests Willfully.

उत्कृष्टं भवं जन्म स्वेच्छया भजति इति अर्थात् भगवान् अपनी स्वेच्छा से भव अर्थात् जन्म धारण करते हैं, इसलिए वे उद्भव हैं। जीव का जन्म अज्ञान की वजह से कर्म के वशीभूत होकर होता है। किन्तु भगवान् अपनी मायाशक्ति को धारण करके स्वेच्छा से जन्म धारण करते हैं, इसलिए वे उद्भव स्वरूप हैं।

उन स्वेच्छा से जन्में परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७९१ –

ॐ सुन्दराय नमः

सुन्दरता की निधिरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Peerless Beauty.

विश्वातिशयि–सौभाग्यशालित्वात् सुन्दरः अर्थात् विश्व से बढ़कर सौभाग्यशाली होने के कारण सुन्दर हैं। यह सम्पूर्ण जगत परमात्मा की सुन्दर अभिव्यक्ति रूप है। इसलिए जगत में कहीं भी सुन्दरता प्रतीत होती है, वह वस्तुतः परमात्मा की ही आंशिक अभिव्यक्ति मात्र है। परमात्मा स्वयं ही सुन्दरता की निधि हैं। इसलिए वे सुन्दर कहलाते हैं। उन सुन्दरता की निधिरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७९२ -

ॐ सुन्दाय नमः

करुणाकर परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Compassionate.

सुष्ठु उनत्ति इति सुन्दः; आर्द्रीभावस्य वाचकः करुणाकरः इत्यर्थः अर्थात् शुभ उन्दन अर्थात् आर्द्रभाव करते हैं, इसलिए वे सुन्द है। आर्द्रभाव करुणा का वाचक है। भगवान् करुणानिधान हैं। जब कोई जीव उनके प्रति समर्पित होता है, तो वह कैसे भी पाप वा पुण्यात्मक कर्मों से युक्त हो, उसको शरण देते हैं और उसकी रक्षा करते हैं। इसलिए वे सुन्द कहलाते हैं।

उन अहैतुक करुणाकर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७९३ –

ॐ रत्ननाभाय नमः

सुन्दर नाभिवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Lustrous Naval.

रत्नशब्देन शोभा लक्ष्यते; रत्नवत् सुन्दरा नाभिः अस्येति रत्ननाभः अर्थात् रत्न शब्द से शोभा लक्षित होती है। भगवान की नाभि रत्न के समान सुन्दर है, इसलिए वे रत्ननाभ हैं। पुराण के अनुसार भगवान् विष्णु की नाभि से कमल उत्पन्न हुआ, जिसमें सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी विराजमान हैं। इस प्रकार सुन्दर एवं विविधतापूर्ण सृष्टि का वास्तविक स्रोत स्वयं भगवान होने से वे रत्ननाभ कहलाते हैं।

उन सुन्दर नाभिवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७९४ –

ॐ सुलोचनाय नमः

ज्ञाननेत्र से युक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has Eyes of Wisdom.

शोभनं लोचनं नयनं ज्ञानं वा अस्येति सुलोचनः अर्थात् भगवान् के लोचन अर्थात् ज्ञान सुन्दर है, इसलिए सुलोचन हैं। भगवान् समस्त जगत को अपने ज्ञाननेत्र अर्थात् विवेक की दृष्टि से देखते हैं। उनकी दृष्टि में पूरा ब्रह्माण्ड जल से उठ़ रही असंख्य लहरों की तरह प्रतीति मात्र है। वे ब्रह्माण्ड रूपी लहरों के होते हुए भी उसके जलस्थानीय सच्चिदानन्द तत्त्व, जो कि अपनी आत्मा ही है, उस तरह देखते हैं। इसलिए वे सुलोचन कहलाते हैं। उन ज्ञानरूपी नेत्र से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७९५ –

ॐ अर्काय नमः

पूज्यतम के भी पूजनीय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Most Worshipful.

ब्रह्मादिभिः पूज्यतमैरपि अर्चनीयत्वात् अर्कः अर्थात् ब्रह्मा आदि पूज्यतमों के भी पूजनीय होने से अर्क हैं। जीवों के लिए उत्पत्ति, स्थिति और प्रलयकर्ता ब्रह्मा, विष्णु और महेश पूजनीय हैं। उनकी पूजनीयता उनके स्वरूपभूत परमात्मा की वजह से हैं। इसलिए सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा इन त्रिदेवों के द्वारा पूजनीय हैं। इसलिए वे अर्क कहलाते हैं।

उन पूज्यतम के भी पूजनीय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७९६ -

ॐ वाजसनाय नमः

सब को अन्न देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Bestower of Food.

वाजम् अन्नमर्थिनां सनोति ददाति इति वाजसनः अर्थात् याचकों को वाज अर्थात् अन्न देते हैं, इसलिए वाजसन हैं। समस्त जीवों का जीवन अन्न से टिका रहता है। सभी जीवों को उसके तथा उसकी वासना के अनुरूप भोज्य पदार्थ प्रदान करनेवाले स्वयं परमात्मा ही है। वे ही अपनी मायाशक्ति से जीव के लिए भोज्यरूप सृष्टि को उत्पन्न करते हैं। इसलिए वे वाजसन कहलाते हैं।

उन अन्न को देनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७९७ –

ॐ श्रृंगिणे नमः

सींगवाले मत्स्यरूप से अवतरित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Horned.

प्रलयाम्भसि श्रृंगवन्मत्स्य विशेषरूपः श्रृंगी अर्थात् प्रलय–समुद्र में सींगवाले मत्स्यविशेष का रूप धारण करने से श्रृंगी हैं। पुराणों के अनुसार जब प्रलय के समय पृथ्वी जलमग्न होने लगी थी। तब भगवान् सींगवाले मत्स्य के रूप में अवतरित हुए थे। तथा अपने सींग में नौका को बांधकर उसमें सवार सप्तर्षियों की तथा वेदों की रक्षा की थी। इसलिए श्रृंगी कहलाते हैं।

उन सींगवाले मत्स्यरूप में अवतरित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७९८ -

ॐ जयन्ताय नमः

अधर्म पर जय के हेतुरूप परमात्मा को नमन।

I salute the one who is the Victorious.

अरीन् अतिशयेन जयति, जयहेतुर्वा जयन्तः अर्थात् शत्रुओं को अतिशय से जीतते हैं अथवा उनको जीतने के हेतु हैं, इसलिए जयन्त हैं। भगवान धर्म की रक्षा के लिए अधर्म के पथ पर चलनवाले शत्रुओं को परास्त करते हैं। अथवा अधर्म पर विजय प्राप्त करने के लिए धर्ममार्गियों को बल तथा सामर्थ्य प्रदान करते हैं। इसलिए वे जयन्त कहलाते हैं।

उन अधर्म पर जय के हेतुरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७९९ –

ॐ सर्वविज्जयिने नमः

सर्ववित् तथा विजयी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Omniscient & Victorious.

सर्वविषयं ज्ञानमस्येति सर्ववित्, आभ्यन्तरान् रागादीन् बाह्यान् हिरण्याक्षादींश्च दुर्जयान् जेतुं शीलमस्येति जयीः , सर्वविच्च असौ जयी च इति सर्वविज्जयी अर्थात् भगवान् को सब विषयों का ज्ञान है, इसलिए वे सर्ववित् हैं, तथा उनका आन्तरिक शत्रुरूप रागादि और बाह्य हिरण्याक्षादि रूप दुर्जय शत्रुओं को जीतने का स्वभाव है, इसलिए वे जयी हैं। इस प्रकार वे सर्ववित् हैं, और जयी भी हैं, इसलिए सर्वविज्जयी हैं।

उन सर्वविज्जयी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८०० –

ॐ सुवर्णबिन्दवे नमः

स्वर्णमय अवयववाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is with Golden Limbs.

बिन्दवो अवयवाः सुवर्णसदृशा अस्येति सुवर्णबिन्दु अर्थात् भगवान् के बिन्दु अर्थात् अवयव सुवर्ण के समान हैं, इसलिए वे सुवर्णबिन्दु हैं। सम्पूर्ण जगत आनन्दस्वरूप परमात्मा के विराट शरीर रूप है। विविध नामरूप परमात्मा के अंग रूप है। यदि जगत को अपनी संकुचिता और रागादि को किनारे रखकर देखें तो आनन्द, प्रेम और जीवन्तता रूप कान्ति का अनुभव होता है। इसलिए सुवर्णबिन्दु अर्थात् सुन्दर अवयव वाले कहलाते हैं। उन सुन्दर अवयववाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

\- ८०१ -

ॐ व्यालाय नमः

सर्प की तरह से स्थित प्रभु को नमन।

I salute the one who is like Serpent.

व्यालवद् ग्रहीतुमशक्यत्वाद् व्यालः अर्थात् जिसे सर्प के समान ग्रहण नहीं किया जा सकता हैं वे भगवान विष्णु व्याल अर्थात अग्राह्य हैं। अग्राह्य उसे बोलते हैं जिसे उपलब्ध इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण नही किया जा सकता है, क्योंकि वे अतिसूक्ष्म हैं, एवं इन्द्रियादि की आत्मा भी हैं अतः वे भगवान् विष्णु ही व्यालरूप अर्थात अग्राह्य हैं।

उन व्यालस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८०२ -

ॐ प्रत्ययाय नमः

प्रतीति स्वरूप को नमस्कार।

I salute the one whose very nature is Knowledge.

प्रतीति प्रज्ञा प्रत्ययः; प्रतीति अर्थात् प्रज्ञा रूप होने से वे प्रत्यय हैं। परमात्मा स्वयं ज्ञानस्वरूप हैं, तथा उनके ही प्रकाश से सब कुछ ज्ञान का विषय बनता हैं। वे ही अन्तःकरण में विविध प्रत्यय रूप से प्रतीत हो रहे हैं। प्रत्येक प्रत्यय ज्ञानस्वरूप चेतना से प्रकाशित होता है, और स्वतः भी ज्ञान रूपी उपादान का कार्य होता है। वे ज्ञानस्वरूप भगवान विष्णु ही समस्त प्रत्ययों की तरह स्थित होते हैं।

उन ज्ञानस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८०३ -

ॐ सर्वदर्शनाय नमः

सबकुछ देखनेवाले को नमस्कार।

I salute the one with eyes everywhere.

सर्वाणि दर्शनात्मकानि अक्षीणि यस्य स सर्वदर्शनः सर्वात्मकत्वात् अर्थात् सर्वरूप होने के कारण सभी जिनके दर्शन अर्थात् नेत्र हैं वे भगवान् सर्वदर्शन हैं। सभी प्राणियों के चक्षु के पीछे वे ही चेतनता प्रदान करते हैं, जिसकी वजह से सब देख पाते हैं। बिना चेतना के कोई भी दर्शन सम्भव नहीं होता है। इस प्रकार वे ही सभी नेत्र आदि इन्द्रियों के पीछे स्थित रहकर विविध विषयों को देखनेवाले हैं।

उन सब कुछ देखने वाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८०४ –

ॐ अजाय नमः

जन्म से रहित को नमस्कार।

I salute the one who is unborn.

न जायते इति अजः अर्थात् जिसका जन्म नहीं होता हैं, वह अजन्मा हैं। किसी का भी जन्म किसी काल विशेष में होता हैं। परमात्मा काल से भी परे हैं, काल परमात्मा से ही उत्पन्न हुआ है, अतः वे अजन्मा कहलाते हैं। अजन्मा होने के कारण वृद्धि, क्षय आदि सभी विकारों से भी रहित हैं।

उन अजन्मा स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८०५ –

ॐ सर्वेश्वराय नमः

सबके ईश्वर को नमस्कार।

I salute the one who is Supreme Controller.

सर्वेषाम् ईश्वराणाम् ईश्वरः इति सर्वेश्वरः अर्थात् सभी ईश्वरों के भी ईश्वर होने से वे सर्वेश्वर हैं। इस जगत में यम आदि शक्तिशाली अन्य सब को नियन्त्रित करने वाले देवता हैं, उन सब के परमात्मा ही नियन्ता हैं। समस्त शक्तियां उन्हींके अधीन रहकर अन्य को नियन्त्रित करती हैं। इसी कारण जगत की सुन्दर व्यवस्था सुचारु रूप से संचालित होती हैं। इस प्रकार वे भगवान विष्णु सर्वेश्वर हैं।

उन सर्वेश्वर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८०६ –

ॐ सिद्धाय नमः

सिद्ध स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is an embodiment of all achievements.

नित्य निष्पन्नरूपत्वात् सिद्धः अर्थात् नित्य सिद्धस्वरूप होने से वे सिद्ध कहलाते हैं। परमात्मा पूर्ण स्वरूप हैं। समस्त सिद्धियां अन्ततः हमें परमात्मा की ही प्राप्ति कराती हैं, तभी कोई साधक सिद्ध कहलाता है। जैसे समस्त नदियां सागर की तरफ ही जाती हैं, लेकिन सागर को कहीं नहीं जाना होता है।

उन सिद्ध एवं पूर्ण स्वरूप परमात्मा को सादर नमस्कार।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८०७ -

ॐ सिद्धये नमः

सभी फलों में श्रेष्ठतम को नमस्कार।

I salute the one who is most superior.

निरतिशयरूपत्वात् फलरूपत्वाद् वा सिद्धिः अर्थात् जो सब से श्रेष्ठ तथा सब के फलरूप होने के कारण सिद्धि हैं। लौकिक दृष्टि से जिसे सब से उत्तम फल माना जाता है, वह स्वर्ग आदि पुण्यलोक भी नाशवान् होते हैं, अतः वे वास्तव में सिद्धि नहीं हैं। जिसे पाने पर अन्य किसी सिद्धि की अपेक्षा नहीं रहती है, वे ही परमात्मा भगवान विष्णु सिद्धि रूप हैं।

उन सबसे उत्तम उपलब्धि स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८०८ –

ॐ सर्वादये नमः

सब के आदि अथवा कारण को नमस्कार।

I salute the one is the first cause of all elements.

सर्वभूतानाम् आदिकारणत्वात् सर्वादिः अर्थात् सब भूतों के आदिकारण होने से सर्वादि हैं। समस्त जगत की उत्पत्ति तथा उनके उत्पत्तिकर्ता ब्रह्माजी के आदि अर्थात् पूर्व में जो शाश्वत तत्त्वस्वरूप से स्थित हैं, उनसे पूर्व किसी का भी अस्तित्व नहीं था। अतः वे भगवान विष्णु ही सर्वादि रूप हैं।

उन सब के आदि, तत्त्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८०९ –

ॐ अच्युताय नमः

स्वरूप से च्युत नहीं होनेवाले को नमन।

I salute the one never transgresses his nature

स्वरूप–सामर्थ्यात् न च्युतो, न च्यवते, न च्यविष्यते इति अच्युतः अर्थात् अपने स्वरूप और सामर्थ्य से कभी भी च्युत नहीं हुए, न होते हैं और न होंगें इसलिए अच्युत कहलाते हैं। परमात्मा सदैव पूर्ण, एवं अखण्ड स्वरूप हैं। विकारी, खण्डयुक्त जीव, जगत आदि अभिव्यक्तियां, उन्हीं पर आश्रित होती हैं। जिस समय सब व्यक्त होता है, उस समय भी परमात्मा पर लेश–मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता है और नहीं कोई सम्भावना होती है। वे भगवान् विष्णु ही अच्युत हैं।

उन अच्युत स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८१० –

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

इस पुस्तिका में भगवान विष्णु के
701 से 800 नाम तक की व्याख्या उपलब्ध है।

701. ॐ विश्वस्मै नमः
702. ॐ विष्णवे
703. ॐ वषट्काराय
704. ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे
705. ॐ भूतकृते नमः
706. ॐ भूतभृते नमः
707. ॐ भावाय नमः
708. ॐ भूतात्मने नमः
709. ॐ भूतभावनाय
710. ॐ पूतात्मने
711. ॐ परमात्मने
712. ॐ मुक्तानां परमायै
713. ॐ अव्ययाय
714. ॐ पुरुषाय
715. ॐ साक्षिणे
716. ॐ क्षेत्रज्ञाय
717. ॐ अक्षराय
718. ॐ योगाय
719. ॐ योगविदां नेत्रे
720. ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय
721. ॐ नारसिंहवपुषे
722. ॐ श्रीमते
723. ॐ केशवाय
724. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
725. ॐ सर्वस्मै
726. ॐ शर्वाय
727. ॐ शिवाय
728. ॐ स्थाणवे
729. ॐ भूतादये
730. ॐ निधयेऽव्ययाय
731. ॐ सम्भवाय
732. ॐ भावनाय
733. ॐ भत्रे
734. ॐ प्रभवाय
735. ॐ प्रभवे
736. ॐ ईश्वराय
737. ॐ स्वयंभुवे
738. ॐ शम्भवे
739. ॐ आदिदेवाय
740. ॐ पुष्कराक्षाय
741. ॐ महास्वनाय
742. ॐ अनादिनिधनाय
743. ॐ धात्रे
744. ॐ विधात्रे
745. ॐ धातवे उत्तमाय
746. ॐ अप्रमेयाय

747. ॐ हृषीकेशाय नमः
748. ॐ पद्मनाभाय
749. ॐ अमरप्रभवे
750. ॐ विश्वकर्मणे
751. ॐ मनवे
752. ॐ स्रष्ट्रे
753. ॐ स्थविष्ठाय
754. ॐ स्थविराय ध्रुवाय
755. ॐ अग्राह्याय
756. ॐ शाश्वताय
757. ॐ कृष्णाय
758. ॐ लोहिताक्षाय
759. ॐ प्रतर्दनाय
760. ॐ प्रभूताय
761. ॐ त्रिककुधाम्ने
762. ॐ पवित्राय
763. ॐ मंगलाय परस्मै
764. ॐ ईशानाय
765. ॐ प्राणदाय
766. ॐ प्राणाय
767. ॐ ज्येष्ठाय
768. ॐ श्रेष्ठाय
769. ॐ प्रजापतये
770. ॐ हिरण्यगर्भाय
771. ॐ भूगर्भाय
772. ॐ माधवाय
773. ॐ मधुसूदनाय
774. ॐ ईश्वराय नमः
775. ॐ विक्रमिणे
776. ॐ धन्विने
777. ॐ मेधाविने
778. ॐ विक्रमाय
779. ॐ क्रमाय
780. ॐ अनुत्तमाय
781. ॐ दुधर्षाय
782. ॐ कृतज्ञाय
783. ॐ कृतये
784. ॐ आत्मवते
785. ॐ सुरेशाय
786. ॐ शरणाय
787. ॐ शर्मणे
788. ॐ विश्वरेतसे
789. ॐ प्रजाभवाय
790. ॐ अह्ने
791. ॐ संवत्सराय
792. ॐ व्यालाय
793. ॐ प्रत्ययाय
794. ॐ सर्वदर्शनाय
795. ॐ अजाय
796. ॐ सर्वेश्वराय
797. ॐ सिद्धाय
798. ॐ सिद्धये
799. ॐ सर्वादये
800. ॐ अच्युताय